

# भक्तिकाल

वाणी और विचार



सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र यादव  
अवधेश कुमार

प्रकाशक  
विजया बुक्स  
1/10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क,  
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032  
फोन : 9910189445  
Email : vijyabooks@gmail.com

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2017

ISBN : 978-93-81480-87-8

मूल्य : 695/-

मुद्रक  
विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स  
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

## अनुक्रम

---

□ प्रस्तावना

□ भूमिका

1. भक्तिकाव्य का रचना-संसार प्रो. वीरेन्द्र मोहन 15
2. इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिन्दुन वारिए  
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 19
3. कबीर का समाज दर्शन प्रो. चन्दा बैन 33
4. 'रामचरितमानस' की वर्तमान सांस्कृतिक भूमिका डॉ. पंकज चतुर्वेदी 39
5. भक्ति साहित्य का समाज दर्शन डॉ. राजेन्द्र यादव 57
6. कबीर का समन्वयवाद डॉ. आशुतोष 66
7. कबीर की प्रासंगिकता का प्रश्न डॉ. हिमांशु कुमार 71
8. संत रविदास की भक्ति में बेगमपुर की अभिव्यक्ति  
डॉ. अरविन्द कुमार 76
9. भक्तिकाल : मीराबाई और स्त्री संघर्ष डॉ. मनीष कुमार 82
10. मीराबाई : जीवन और भक्ति सन्दर्भ डॉ. छबिल कुमार मेहेर 90
11. भ्रातृत्व के आदर्श : राम और भरत डॉ. सरोज गुप्ता 97
12. रामकथा का कालजयी ग्रन्थ 'श्रीरामचरितमानस' डॉ. घनश्याम भारती 102
13. सूरदास और उनके काव्य में भक्ति की लहरें! अवधेश कुमार 106
14. कबीर : सामाजिक समरसता के क्रांतिकारी संत  
डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा 119

## संत रविदास की भक्ति में बेगमपुर की अभिव्यक्ति

डॉ. अरविन्द कुमार

संत रविदास एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाह रहे थे, जहाँ पर किसी प्रकार का गम न हो। वह समाज गमरहित नजर आये। इनकी कविता का मूलस्वर इसी को लेकर आगे बढ़ता है। इसलिए इनकी पूरी कविता में 'बेगमपुर' केन्द्रीय भाव के रूप में उभरता है, जो मानवता के प्रति उनकी संवेदना का परिचायक है। भक्ति आंदोलन के शीर्ष कवि संत शिरोमणि गुरु रविदास जी का नाम बड़े सम्मान के साथ भक्त कवियों में जोड़ा जाता है। जिस प्रकार से कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास और गुरुनानक समाज में हो रहे, अनवरत तरह से भेदभाव को समाप्त कर एक समता मूलक समाज का निर्माण करना चाहते थे, उसी प्रकार से गुरु रविदास भी भारतीय समाज में एकीकरण लाने के लिए प्रयासरत थे। गुरु रविदास जी समाज में एक भक्त कवि ही नहीं थे, बल्कि एक समाज सुधारक के रूप में जाने जाते हैं। 13 वीं 14 वीं शताब्दी में भारत देश विभिन्न वर्ण और जाति में बटा हुआ था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जिसमें शूद्र को अछूत, दलित, निम्न जाति का भंगी, चूहड़ा कहकर समाज में तिरस्कृत किया जाता था। शूद्र को स्वतंत्र रूप से जीवन जीने का अधिकार नहीं था, तालाब या कुआँ से पानी नहीं ले सकता था। मंदिर, मस्जिद में प्रवेश वर्जित था। किसी ब्राह्मण या क्षत्रिय के घर नहीं जा सकता था। इस तरह से जाति भेद की भावना समाज में कूट-कूट कर भरी हुई थी। जिससे ये भक्त कवि इस निम्न वर्ण को समानान्तर धरातल से जोड़ने और भेदभाव को समाप्त करने का वीणा उठाया। उनका माध्यम था, भक्ति भावना। भक्ति भावना में भक्त और ईश्वर में अभेद बताया। प्रत्येक प्राणी ईश्वर के द्वारा निर्मित है। उसमें सबकुछ समान है। वह चाहे किसी भी वर्ण में जन्म ले, लेकिन उसकी जाति सिर्फ मनुष्य की जाति होगी। मानव समाज ने यह भेदभाव निर्मित किया है। लेकिन ईश्वर ने भक्ति को महत्व दिया है। भक्त कवियों की मान्यता है।